अस्तित्व प्रमाणित हो जाता है। हम अन्य आत्माओं की एकता एवं स्थायित्व अपनी आत्मा की एकता एवं स्थायित्व के आधार पर निगमित कर लेते हैं।

ईश्वर (God)—बर्कले दार्शनिक होने के पहले एक पादरी थे। समाज को सही दिशा प्रदान करना इनका कर्तव्य था। मध्ययुगीन परम्पराएँ इनके दर्शन में पुनः जाग पड़ी। बर्कले के दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मवाद एवं ईश्वरवाद की स्थापना करना था। उनके आध्यात्मवाद की व्याख्या करते हुए कुशमैन कहते हैं–"जिस व्यक्ति के चारों ओर बर्कले का दर्शन हो (अर्थात् बर्कले के विचारधारा से घिरा हो) वह अवश्य ही आध्यात्मिक है। ऐसा व्यक्ति वर्तमान समाज से ऊपर उठ जाता है क्योंकि वह भौतिक-समाज का नहीं, वरन् धार्मिक समाज का व्यक्ति है जो ईश्वर के साथ विहार और वार्तालाप करता है।" फ्रेजर के अनुसार–"बर्कले का दर्शन पूर्णतया ईश्वरवादी है।" बर्कले अपने दर्शन को तमाम विसंगतियों से बचाने के लिए ईश्वर को स्वीकार करता है। बर्कले जड़वाद, संदेहवाद एवं अनीश्वरवाद के कट्टर शत्रु हैं। भौतिकता को उन्होंने कभी महत्व नहीं दिया। भौतिकवाद का खण्डन करके अध्यात्मवाद की स्थापना करते हैं। अध्यात्मवाद की स्थापना के लिए प्रत्ययवाद का सहारा लेते हैं। जड़तत्त्व का खण्डन करके ईश्वरवाद की स्थापना करते हैं। ईश्वर सम्पूर्ण विश्व का संचालक, सृष्टि के प्रयोजन का मूल आधार, सृष्टि का व्यवस्थापक, क्रमबद्धता है। नियमबद्धता इत्यादि का कारण ईश्वर है। वह संपूर्ण

---

1. संगमलाल पाण्डेय, बर्कले संग्रह, पृ0 105.
2. Moreover, as we conceived the ideas that are in the minds of other spirits by means

Scanned with CamScanner

जगत का अधिष्ठाता, समस्त विज्ञानों का कारण है। विज्ञानों या प्रत्ययों का कारण ईश्वर है। बर्कले कहते हैं–"ईश्वर क्रियाशील आत्मा है, वह असीम आत्मा है, मानव आत्माएँ क्रियाशील हैं किन्तु उनमें निष्क्रियता भी है, इसी कारण वे ईश्वर की अपेक्षा कम सत्य है तथा वे सीमित हैं। ईश्वर संवेद्य-प्रत्ययों को उत्पन्न करता है, मानव आत्माएँ केवल उन प्रत्ययों के प्रतिबिम्ब उत्पन्न करती है।"[1] हमारे मन में धारणाएँ असंख्य और विचित्र हैं। हमारी सब धारणाओं का जो कारण है वह और उसकी शक्ति निश्चित ही असीम है और उसकी बुद्धि भी अनन्त है। नहीं तो असंख्य विचित्र धारणाओं का असंख्य मनों में संचालित करना असंभव हो जाता है। विश्व के सभी मनों पर उसका प्रभुत्व है। यह कार्य असीम शक्ति सम्पन्न और अनन्त बुद्धिमय कारण ईश्वर को छोड़कर और कौन हो सकता है? ईश्वर ही हमारे मन की सब धारणाओं का कारण है। ईश्वर का ज्ञान दिव्य-अन्तर्बोध (Conception or Notion) रूप में होता है। मनुष्य एक सीमित आत्मा या व्यक्ति के रूप में ईश्वर का अंश है। ईश्वर, मनुष्य की अपेक्षा उच्चतर स्वभाव का है। इसीलिए ईश्वर और मनुष्य में एकता पाई जाती है। इस एकता के कारण ही मनुष्य ईश्वर के समीप है। बर्कले के शब्दों में "ईश्वर में हम रहते हैं, चलते हैं और अपना अस्तित्व लाभ करते हैं।" वह सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्ता है, ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापी है। वह असीम शुभ एवं दयालु भी है, वह पूर्ण, शाश्वत, विवेकी और महान, बुद्धिमान सत्ता है। ईश्वर मनुष्य को दण्ड देता है किन्तु वह दण्ड देकर उससे बदला नहीं लेता है। वह जगत का सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता एवं संहारकर्त्ता है। अपनी इच्छा से जगत की सृष्टि करता है। ईश्वर जगत का उपादान एवं निमित्त कारण है। संपूर्ण सृष्टि उसकी इच्छा का प्रतिफल है। ईश्वर द्वारा उत्पन्न वस्तुएँ भ्रम न होकर वास्तविक हैं किन्तु उनका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। ये सभी वस्तुएँ ईश्वर के मनस में स्थित प्रत्यय हैं। 'प्रकृति ईश्वर की भाषा है' (Nature is the language of God) बर्कले कहते हैं–"प्रकृति का वह स्रष्टा (ईश्वर) मनुष्य की आँखों से निरन्तर बोल रहा है।"[2] सृष्टि ईश्वर के वैभव और महिमा को व्यंजित करती है। बर्कले कहते हैं–"इन्द्रिय-संवेदन पुंज रूप जगत की सृष्टि मैं स्वयं नहीं करता मैं तो इसे ग्रहण मात्र करता हूँ, इसकी सृष्टि परमात्मा द्वारा होती है।" ईश्वर पुरुषोत्तम रूप है। बर्कले के धार्मिक दृष्टिकोण के प्रति कोई आकर्षण न हो तो बर्कले के दर्शन की परिणति ह्यूम के संदेहवाद में होगी। बर्कले के दर्शन से ईश्वर की धारणा को अलग कर दें तो समस्त जगत ऐसे प्रत्ययों का प्रपंचमात्र रह जाता है जिसके पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में निश्चयपूर्वक कुछ भी कहा नहीं जा सकता है।

बर्कले अल्सिफ्रान के चौथे संवाद में ईश्वर के अस्तित्व का समर्थन करने में पूर्णतया सफल हुए। उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए निम्नांकित तर्क प्रस्तुत किए हैं–

1. **कारण-कार्य मूलक तर्क** (Causal Argument)–सृष्टि में जितनी वस्तुएँ है सभी का कोई-न-कोई कारण है। जगत प्रत्यय रूप हैं, प्रत्यय ही यथार्थ वस्तुएँ हैं तथा

Scanned with CamScanner

कार्य रूप हैं। यदि प्रत्यय कार्य'-रूप हैं तो इनका कारण अवश्य होना चाहिए। इन प्रत्ययों के चार कारणों की संभावना हो सकती है–(1) विज्ञान (2) जड़-तत्त्व, (3) (3) निष्क्रिय एवं आत्मा (4) ईश्वर। विज्ञान स्वयं विज्ञानों का कारण नहीं हो सकते हैं, क्योंकि प्रत्यय तो स्वयं कार्य हैं। निष्क्रिय प्रत्यय स्वयं कार्य हैं वे प्रत्ययों के कारण नहीं हो सकते हैं। यदि प्रत्यय ही प्रत्ययों के कारण होंगे तो इससे अनवस्था दोष उत्पन्न हो जायेगा। इसके अतिरिक्त प्रत्यय शक्तिशाली सजीव एवं स्पष्ट हैं, किन्तु उनमें ऐसे प्रत्ययों को उत्पन्न करने की शक्ति नहीं है। जड़ तत्व का अस्तित्व नहीं है, इसलिए उसे यथार्थ वस्तुओं का कारण भी नहीं कहा जा सकता है। जीवात्माएँ क्रियाशील हैं लेकिन ये प्रत्ययों का कारण नहीं हो सकती हैं। ये केवल प्रत्ययों को ग्रहण करती है। जीवात्माओं के भीतर वह क्षमता नहीं है कि वे विज्ञानों को उत्पन्न कर सकें। विज्ञानों में वह शक्ति एवं अनिवार्यता होती है कि आत्माओं के पास उन्हें ग्रहण करने के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं होता है। ये प्रत्यय किसी एक आत्मा में नहीं उत्पन्न होते हैं किन्तु सभी आत्माओं में समान रूप से उत्पन्न होते हैं। ऐसे विज्ञानों का सृष्टिकर्त्ता एक मात्र ईश्वर होता है। ईश्वर की सत्ता ही जगत को अर्थ एवं सार्थकता प्रदान करती है। बर्कले कहते हैं–"जब मैं दिन के प्रकाश में अपनी आंखें खोलता हूँ तो विवश होकर यह स्वीकार करता हूँ कि कुछ प्रत्ययों को उत्पन्न करना मेरी शक्ति के बाहर है। अतः इन सभी प्रत्ययों का कारण ईश्वर है।" यहाँ प्रश्न यह है कि कारण, तथा कार्य में क्या सम्बन्ध है। साधारणतया हम गर्मी का कारण सूर्य, बादलों को वर्षा का कारण, अच्छे स्वास्थ्य का कारण पौष्टिक भोजन मानते हैं। बर्कले का मत इससे भिन्न है। वे अग्नि को उष्णता का कारण, या जल को शीतलता का कारण नहीं स्वीकार करते हैं बल्कि इनका कारण आत्मा है।[1] कारण और कार्य में पूर्ववर्ती (Antecedent) और अनुवर्ती (Consequent) सम्बन्ध है। पूर्ववर्ती घटनाएँ कारण एवं अनुवर्ती कार्य होती हैं। अग्नि और ताप के सम्बन्ध में बर्कले कहते हैं कि अग्नि ताप का चिन्ह है। इस चिन्ह को जब हम देखते हैं तो हमें संकेतित वस्तु का ज्ञान होता है। कार्य और कारण का सम्बन्ध तो ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। यह इच्छा की स्वतंत्रता ईश्वर तक सीमित है। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु ईश्वर की दिव्य-शक्ति की ओर संकेत करती है। ईश्वरीय अंतर्बोध अन्य आत्माओं के ज्ञान की तुलना में सर्वाधिक प्रामाणिक है। भले ही ईश्वर का हमें इन्द्रियानुभव नहीं होता है लेकिन जिन वस्तुओं का हमें अनुभव होता है वे सब ईश्वर की ओर ही संकेत करती है। प्राकृतिक व्यापार, दैवीय बुद्धि से ओत-प्रोत है। ईश्वर के अभाव में किसी अनुभवगम्य विषय का पर्याप्त ज्ञान नहीं हो सकता है। ईश्वर की सत्ता इसी विश्वास पर आधारित है। Esse est Credi.

---

1. It will upon this be demanded [illegible] away

Scanned with CamScanner

2. **प्रयोजनमूलक तर्क** (Teleological Arguments)–संपूर्ण सृष्टि में अद्भुत व्यवस्था, नियमबद्धता, क्रमबद्धता, संतुलन इत्यादि को देखकर यह लगता है कि इस रचना के पीछे कोई-न-कोई अनन्त शक्ति सम्पन्न तत्व है।[1] जिसने इस सृष्टि की रचना इतने कलात्मक ढंग से की है। बर्कले के शब्दों में "यदि ध्यानपूर्वक, प्राकृतिक वस्तुओं की नियमबद्धता, व्यवस्था एवं शृंखला पर विचार करें, यदि हम सृष्टि के अद्भुत, आश्चर्यजनक सुंदरता, पूर्णता, सृष्टि की उत्कृष्ट रचना तथा उसके साथ संपूर्ण सृष्टि के साथ संतुलन और अविरोध पर विचार करें और सबके ऊपर पशुओं की वासनाओं, क्षुधाओं, मूल प्रवृत्तियों और सुख-दुख की भावनाओं को देखें, साथ में एक नित्य, अनन्त, ज्ञान, शिव तथा पूर्ण इन गुणों के अर्थ पर ध्यान दें तो यह देखेंगे कि वे आत्मा से सम्बन्धित हैं। जो सर्वत्र कर्म करती हैं जिसमें सभी वस्तुएँ समाविष्ट हैं।[2] प्रकृति की सुसंगत रचना एक अनन्त बुद्धि सम्पन्न परमात्मा के तरफ संकेत करती है। वह सत्ता ईश्वर है। वह सम्पूर्ण सृष्टि का प्रयोजनकर्त्ता है। ईश्वर के अतिरिक्त और कोई सत्ता नहीं है जिसमें प्रयोजन की शक्ति पाई जाती है। वह अनन्त बुद्धि एवं ज्ञान सम्पन्न है। इन सब बातों से ईश्वर की सत्ता प्रमाणित होती है।

इसी संदर्भ में बर्कले ने एक अहम् प्रश्न यह उठाया कि क्या जिस रूप में हम सृष्टि को देखते हैं ईश्वर भी उसी रूप में देखता है। उपर्युक्त दो तर्कों के आधार पर बर्कले ने ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित किया किन्तु इन दो तर्कों के अतिरिक्त अनुमान और उपमान के द्वारा भी ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार उपमान एवं अनुमान के द्वारा अन्य आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान होता है उसी प्रकार इन प्रमाणों के द्वारा हमें ईश्वर का भी ज्ञान होता है–

1. **अनुमान** (Hypothesis)–हमें ईश्वर का ज्ञान, अन्य आत्माओं की अपेक्षा अधिक अपरोक्ष एवं निश्चयात्मक होता है। बर्कले की उक्ति है–"हम यहाँ तक कह सकते हैं कि मनुष्य के अस्तित्व की अपेक्षा ईश्वर के अस्तित्व को अधिक स्पष्टता से देखा जा सकता है क्योंकि मानवीय कर्त्ताओं की अपेक्षा हमारी आत्मा पर प्रकृति के प्रभाव अत्यधिक एवं असंख्य हैं------उस महान आत्मा के असितत्व को और स्पष्ट रूप से व्यक्त न करता हो जिसे हम प्रकृति का लेखक (Author of Nature) कहते हैं। दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करने में मनुष्य के संकल्प का लक्ष्य उसके शरीर के अंगो की गति

---

1. ब्रह्मसूत्र, रचनानपपत्तेश्चनानमानम ।।

Scanned with CamScanner

ही होता है। किन्तु इस प्रकार की गति किसी दूसरे व्यक्ति के मन में किसी विज्ञान को उत्पन्न करे, यह पूर्ण रूप से ईश्वर की इच्छा पर निर्भर होता है।[1] ईश्वर सम्पूर्ण जगत में व्याप्त है। ईश्वर के बिना दृश्य जगत का ज्ञान असंभव है। संपूर्ण सृष्टि को देखकर ही हम स्रष्टा का अनुमान करते हैं।

2. उपमान (Analogy)–आत्मा की ही तरह ईश्वर का अस्तित्व का भी उपमान के द्वारा सिद्ध की जा सकती है। जिस प्रकार किसी मनुष्य के रूप, रंग, आकृति, आकार आदि विज्ञान-पुंजों को देखकर आत्मा का अनुमान कर लिया जाता है। उसी प्रकार सम्पूर्ण प्रकृति के दृश्य-पुंजों को देखकर हम ईश्वर का अनुमान कर लेते हैं। जिस प्रकार मनुष्य द्वारा उत्पन्न गतियाँ मानवीय आत्मा के प्रतीक हैं, उसी प्रकार प्रत्येक वस्तु जिसे हम देखते हैं, सुनते हैं, स्पर्श करते हैं या किसी अन्य प्रकार किसी इन्द्रिय द्वारा प्रत्यक्ष करते हैं, ईश्वर की शक्ति का प्रतीक या कार्य होता है। अतः उपमान के द्वारा बर्कले एक ऐसी सत्ता को सिद्ध करने का प्रयास करते हैं, जिसमें हम स्थित हैं, विचरण करते हैं और अपना अस्तित्व धारण करते हैं।

इस प्रकार बर्कले अपने इन तर्कों के द्वारा ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करते हैं। ईश्वर के लिए सृष्टि का क्या महत्व है? बर्कले कहते हैं कि सृष्टि का अस्तित्व केवल जीवात्माओं के लिए ही है। ईश्वर के लिए सृष्टि का अस्तित्व नहीं है। सृष्टि का प्रत्यक्ष जैसे हम करते हैं वैसे ईश्वर नहीं करता है। जीवात्माएँ जो सृष्टि का प्रत्यक्ष करती हैं वह अनित्य प्रतिबिम्ब (Temporal Ectypes) होता है। हम मूल नित्य बिम्बों (Eternal Archetypes) को नहीं जानते हैं। उसे केवल ईश्वर जानता है। जिस सृष्टि को हम जानते हैं वह ईश्वरीय मूल बिम्बों का प्रतिबिम्ब होता है। बर्कले ने जगत की परमार्थिक एवं व्यावहारिक सत्ता में भेद किया है। परमार्थिक सत्ता का ज्ञान केवल ईश्वर को होता है, साधारण प्राणियों को व्यवहारिक जगत का ज्ञान होता है। बर्कले 'पुरुषोत्तमवाद' (Panentheism) में विश्वास करते हैं। वैसे 'पैनेनथीज्म' (Panentheism) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम जर्मन दार्शनिक क्राउज ने किया था। पुरुषोत्तमवाद का तात्पर्य है कि यद्यपि जगत ईश्वर के भीतर अंतर्भूत है फिर भी ईश्वर जगत से परे है। ईश्वर जगत् का निमित्त एवं उपादान कारण है। बर्कले का मत स्पिनोजा के सर्वेश्वरवाद से सर्वथा भिन्न है।

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के पश्चात् बर्कले ने जीवात्मा एवं परमात्मा में अंतर स्थापित किया है। जीवात्माओं में सक्रियता और निष्क्रियता दोनों ही पाई जाती है। जीवात्माएँ सक्रिय होते हुए भी निष्क्रिय हैं। यही कारण है कि उनमें कम सत्यता पाई जाती है। ईश्वर, मूल बिम्बों को उत्पन्न करता है लेकिन जीवात्माएँ उन्हें उत्पन्न करने में असमर्थ है। जीवात्माएँ केवल प्रतिबिम्बों को उत्पन्न कर सकती हैं। जीवात्माओं और परमात्मा का ही संसार में स्वतंत्र अस्तित्व है। अन्य किसी का भी स्वतंत्र अस्तित्व नहीं

---

1. There is not any one mark that denotes a man or effect produced by him, which does not more strongly evince the being of that spirit who is the Author of Nature.'– मानवीय ज्ञान के सिद्धान्त, पृ0 147.

Scanned with CamScanner

है। यहाँ बर्कले प्रत्ययवादी की अपेक्षा अध्यात्मवादी अधिक है। जगत अध्यात्ममय है, हम सभी ब्रह्मलोक के निवासी हैं। एक शृंखला (Siries) में बर्कले ने लिखा है– "जीवात्मा, परमात्मा का ही एक अंश है, मनुष्य की आत्मा में बुद्धि से पूर्व और महान एक उच्चतर स्वभाव है, जिसके कारण हम एक हैं।.....इस एकता के कारण हम ईश्वर से अधिक समीपतः संयुक्त है।"[1] पुनः बर्कले कहते हैं–"ईश्वर में हम स्थित हैं, विचरण करते हैं, और अस्तित्व को धारण करते हैं।"[2]

सामान्य समीक्षा

बर्कले का दर्शन गंभीरता से विचार करने लायक है। बर्कले ने कहना क्या चाहा था, इसको लेकर अनेक आलोचनाएँ भी हुई हैं। बर्कले मूलतः पादरी थे किन्तु उनकी रुचि व्यवस्थित चिंतन विज्ञान और धर्म में एक समान है। वह अनुभववाद की सीमा में रहकर अपने आध्यात्मिक दर्शन का प्रतिपादन करना चाहते हैं। अनुभववादी लॉक तथा अन्य भौतिकवादी दार्शनिकों के सिद्धान्त से जड़वाद की पुष्टि हो रही थी। इसीलिए वह लॉक के जड़वाद के खण्डन से ही अपना चिंतन प्रारंभ करते हैं। वह भौतिकवाद पर उसकी सैद्धान्तिक भूलों के कारण ही नहीं बल्कि घोर नास्तिकता के कारण आक्षेप करते हैं। अज्ञात जड़तत्त्व के स्वतंत्र अस्तित्व का निषेध करके अनेक दार्शनिक समस्याएँ समाप्त कर देते हैं। बर्कले, लॉक के अनुभववाद को स्वीकार करते हैं, किन्तु यदि संवेदन एवं स्वसंवेदन ही हमारे ज्ञान का मूल स्रोत है, तो जड़ तत्त्व का प्रत्यक्ष अनुभव न होने पर भी लॉक के द्वारा स्वीकृत जड़तत्त्व ही संशयवाद का कारण है। भौतिक जगत को प्रत्यय जगत में रूपांतरित करके लॉक के द्वैतवाद को समाप्त कर देते हैं। अध्यात्मवाद को स्वीकार लेने से अनीश्वरवाद का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। भौतिकवादी, भौतिक तत्व को ही वस्तुओं की संवेदनाओं का कारण मानते हैं। इसे स्वीकार लेने से मानव की स्वतंत्रता एवं बौद्धिकता मूल्यहीन हो जाएगी। इस प्रकार आत्मा यानी चेतन तत्त्व एवं जड़वाद का द्वैत ईश्वर के सम्मुख एक गंभीर चुनौती बन जाती है। बर्कले ने इन चुनौतियों का सामना किया। वह अनुभववाद में मौजूद अंर्विरोधों को समझ नहीं सके। अनुभववादी, ज्ञानमीमांसा की विसंगतियों को तार्किक निष्कर्ष तक नहीं पहुँच पाता है। इसीलिए बर्कले को 'अपूर्ण-ह्यूम' कहा जाता है। ह्यूम के दर्शन में अनुभववाद चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है। अनुभववाद के द्वारा न तो लॉक के जड़वाद की स्थापना हो सकती है न ही बर्कले के अध्यात्मवाद की। बर्कले ने अनुभववाद एवं अध्यात्मवाद का असंगत मेल करने का प्रयास किया।

बर्कले ... का भी खण्डन करते हैं; क्योंकि

Scanned with CamScanner